राष्ट्रीय हिमालयी अध्ययन मिशन

SIMAR

# कपूरकचरी उत्पादन तकनीकी पुस्तिका

**संकलन**

## सिमार, हाट कल्याणी, देवाल, चमोली, उत्तराखण्ड।

सहयोग– गोबिन्द बल्लभ पंत राष्ट्रीय हिमालयी पर्यावरण एवं सतत् विकास संस्थान, कोसी, कटारमल, अल्मोडा।

**आवास एवं स्वभाव :** कपूर कचरी एक बहुवर्षीय औषधीय तथा सुगन्ध पादप है। जो उष्ण नम उष्णकटिबंधीय से लेकर शीतोष्ण क्षेत्रों में समुद्र तल से 1400 मीटर से 2500 मीटर उंचाई वाले नाम तथा उष्णक्षेत्रों में प्राकृतिक रूप में मुख्यतः बाज तथा देवदार के जंगलों में पाया जाता है।

**औषधीय उपयोग :** कपूर कचरी के प्रकन्द सुगन्धित होते हैं यह अस्थमा, उल्टी, खांसी इत्यादि में अत्यधिक उपयोगी होती है इससे बनने वाली दवाईयां अपच, अजीर्ण, वात, कफ, पित्त रक्त रोगों व मूत्र रोगों के उपचार में लाभकारी है।

**कृषिकरण :** कपूर कचरी के कृषिकरण के लिए सामान्य वर्षा वाले क्षेत्रों में तथा छायादार स्थानों की आवश्यकता होती है। मिट्टी रेतीली (जिसमें रेत की मात्रा लगभग 40 से 50 प्रतिशत हो) व हल्की अम्लीय होनी चाहिए जिसमें पर्याप्त मात्रा में नमी रहती हो। सामान्यतः इसकी खेती के लिए वार्षिक वर्षा 1400 से 2500 मिमी0 होनी आवश्यक है, परन्तु खेत में पानी की जमाव इसकी राइजोम के लिए हानिकारक होता है।

**प्रवर्धन एवं प्रसारण :** कपूर कचरी में प्रवर्धन मुख्यतः बीजों तथा प्रकन्द द्वारा किया जाता है, किन्तु बीज द्वारा किये गये प्रवर्धन में प्रकन्द को औषधीय उपयोग हेतु तैयार होने में तीन से चार साल लगते हैं वहीं प्रकन्द द्वारा प्रर्वधन किये जाने पर प्रकन्द को औषधीय उपयोग हेतु तैयार होने में दो साल लगते हैं। तद्पश्चात प्रकन्द में से कल्ले (buds) 25 से 30 दिनों के अन्दर प्रस्फुरित हो जाते हैं।

**फसल अवधि :** कपूर कचरी की प्रकन्द का रोपण मुख्यतः जून से दिसम्बर माह तक किया जाता है। बाद की जाती है। फसल की कटाई रोपण के उपरान्त 1 वर्ष से 3 वर्ष

**पौध संख्या तथा दूरी :** सामान्यतः एक नाली क्षेत्र में रोपण हेतु 25–30 किग्रा0 प्रकन्द की आवश्यकता होती है। कपूर कचरी प्रकन्द को जून से दिसम्बर माह तक लगाया जा सकती है। प्रकन्द के छोटे छोटे टुकडे (जिनपर आंख आ रखी हो) करके खेत में 45 सेमी से 45 सेमी0 की दूरी पर रोपित किया जाता है।

**रोपण हेतु खेत की तैयारी :** कपूर कचरी के रोपण हेतु खेत को कम से कम तीन बार जोत कर खर पतवार का पूर्णतः सफाया कर लेना चाहिए, जुताई के उपरान्त खेत मे पाटा चलाकर समतल कर लेना चाहिए। भूमि की मिट्टी रेतीली (जिसमें रेत की मात्रा लगभग 40 से 50 प्रतिशत हो) व हल्की अम्लीय होनी चाहिए जिसमें पर्याप्त मात्रा में नमी रहती हो। यदि फसल को प्रकन्द माध्यम से उगाई जा रही है तो पहली बार मई में खेत की जुताई करनी चाहिए। दुसरी जुताई से पहले जून–जुलाई 10–15 किग्रा खाद को एक नाली भूमि में समान रूप से मिलाया जाता है। दूसरी और तीसरी जुताई जून के अन्त या मानसून के प्रारम्भ में की जाती है।

**रोपण :** कपूर कचरी की प्रकन्द की रोपण वर्षा ऋतु में तथा जून से लेकर दिसम्बर माह तक किया जाता है। परन्तु जिन स्थानों पर सिंचाई की प्रबन्धन हो तो अप्रैल में भी किया जा सकता है।

**सिंचाई एवं निराई–गुड़ाई :** कपूर कचरी की प्रकन्द के रोपण के दिन में कम से कम दो बार सिचाई की जानी आवश्यक है जब तक प्रकन्द जड़ पकड़ ले। मुख्यतः खेत में रोपण सामान्यतः वर्षा ऋतु के दौरान करने के कारण सिचाई की अधिक आवश्यकता नहीं होती है परन्तु यदि वर्षा कम हो रही हो तो प्रकन्द रोपण के एक माह तक दिन में कम से कम एक बार सिंचाई करनी आवश्यक है ताकि भूमि में नमी बनी रहे। तद्उपरान्त 7 से 10 दिन में एक बार सिंचाई करनी चाहिए।

पहली गुडाई एवं निराई पौध रोपण के 20 से 30 दिन के अन्दर कर देनी चाहिए तथा द्वितीय निराई व गुड़ाई आवश्यकतानुसार करनी चाहिए। मुख्यतः खेत में कम से कम माह में दो बार सावधानी पूर्वक खरपतवार निकालनी चाहिए। शीतकाल मे पाले से बचाने के लिए खेत को सूखी पत्तियों अथवा घास–फूस से लाभदायक पाया जाता है।

**खाद व कम्पोस्ट :** पौध रोपण से पूर्व खेत में प्रतिनाली 20–25 कि० ग्राम गोबर की खाद मिलानी चाहिए। तत्पश्चात रोपण के तीन माह बाद पौध के चारो ओर प्रति पौधा 100 से 150 ग्राम गोबर की खाद डालकर हल्की गुडाई व सिचाई कर लेनी चाहिए। यह क्रम प्रति 4 या 5 माह के बाद नियमित दोहराना चाहिए। मुख्यतः खेत को कृषिकरण हेतु तैयार करने से पहले उचित मात्रा में गोबर खाद मिला लेना चाहिए एवं साल में कम से कम दो बार गोबर डाल देना चाहिए।

**कीट नियंत्रण :** मुख्य रूप से कपूर कचरी के पौधों में ष्राइजोम रोगष नामक बीमारी का संक्रमण होता है जिसमें पौधे की पत्तियां पीली पड़ जाती है तथा प्रकन्द (राइजोम) सड़ने लगता है। इस बीमारी से बचाव हेतु पौधों में 0-0.1% बावस्टिन के घोल का छिडकाव करना चाहिए। यदि पौधे में लिफ स्पाट नामक बीमारी का संक्रमण होता है, जिसमें पत्तियों में पीले–पीले रंग के धब्बे बन जाते हैं क्योंकि उस भाग में हरित लवक नष्ट हो जाता है व पत्तियां सूख जाती है, के बचाव हेतु 4:4:50 के अनुपात में बोरडियक्स मिक्सचर का प्रयोग करना चाहिए। अन्यथा बीमारी वाले सम्पूर्ण पौधे को उखाड़ कर जमीन में दबा देना चाहिए या फिर पौधे को उखाड़ कर जला देना चाहिए। पौधे के जिस भाग से कीट लगते हैं उस भाग को काट कर अलग कर देना चाहिए या उस भाग को जमीन में दबा देना चाहिए।

**फसल कटाई :** प्रकन्द से तैयार फसल दूसरे वर्ष में कटाई हेतु तैयार हो जाती है। फसल अक्टुबर–नवम्बर के माह में तैयार होती है। सुखे हुए पत्तियों तथा तनों को सावधानीपूर्वक निकाल देना चाहिए एवं अच्छी प्रकार से धोकर प्रकन्द को छोटे छोटे टुकड़े कर देने चाहिए। क्योंकि पहले वर्ष में पैदावार बहुत की कम होती है।

**फसल पश्चात प्रबंधन :** प्रकन्दो (राइजम) को साफ पानी से अच्छी तरह धोकर छोटे छोटे टुकड़े में काट कर

छायादार स्थाना पर सुर पारम्परिक विधि से भी प्रकन्द को सुखाया जा सकता है। तथा प्रकन्द (राइजोम) के छोटे छोटे टुकड़ों को सुखाने की पारम्परिक विधि में बांस की चटाई में फैलाकर धूप में रख दिया जाता है। इस प्रक्रिया में सात से दस दिन का समय लग जाता है। हांलाकि धूप में सुखाने से प्रकन्दों का रंग हल्का भूरा हो जाता है जिससे उसकी गुणवत्ता पर असर पडता है, इसलिए इसके प्रकन्द को छांव में सुखाना ज्यादा लाभकारी होता है जिससे प्रकन्द की गुणवत्ता भी अच्छी रहती है, हांलाकि इस विधि से सुखाने पर ज्यादा समय लगता है।

**भण्डारण :** सुखे हुए प्रकन्दो को हवा बन्द स्थानों में जूट या गनी थैलों में भरकर विपणन के लिये भण्डारित किया जाता है। संग्रहित राइजोम को नमी, दीमक व धुए से दूर रखना उचित होता है।

**विपणन एजेंसी :** कपूर कचरी के विपणन हेतु पतंजलि, डाबर, इमामी, आर्गेनिक इंडिया, जिला भेषज संघ, वन विकास निगम इत्यादि कंपनियों से संपर्क किया जा सकता है।

**औसतन उत्पादन :** कपूर कचरी की प्रति पौध से औसतन 80 ग्राम उत्पादन होता है। प्रति नाली 80 –100 किलोग्राम होता है।

## कृषिकरण लागत :

प्रतिनाली अनुमानित लागत – रू 2000 (3साल)

प्रतिनाली उत्पादन – 80–100 कि0ग्रा0 (सूखा)

वर्तमान बाजार भाव – 120–150 प्रति कि0ग्रा0

प्रतिनाली कुल लाभ – रू 9600–15000

प्रतिनाली शुद्ध लाभ – रू 7600– 13000